शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

हिंदू धर्म

विनोबा

इन दिनों हिंदू, हिंदूत्व और हिंदूवाद को लेकर देश में बहस छिड़ी हुई है। अपने-अपने सिद्धांत, विचार और तर्क के आधार से तीनों शब्दों को अनेक प्रकार से परिभाषित किया जा रहा है। विचारधारा विशेष से आवेशित समूह की व्याख्याएं इस शब्द को मूल पर कुठाराघात कर रही हैं। फलतः देश में भ्रम की स्थिति निर्मित हो रही है। आज प्रस्तुत की जा रही व्याख्याओं में ऋषिमुनियों और संतों के चिंतन को दरकिनार कर दिया है। इस परिप्रेक्ष्य में विनोबा के हिंदू धर्म के चिंतन को देखना प्रासंगिक होगा।(संपादक)

हिंसया दूयते चित्तं, तेन हिंदुरितीरित - हिंसा से जिसका चित्त दुःखित होता है, उसे हिन्दू कहते हैं। यह निरुक्ति हिन्दू को विश्वव्यापक अर्थ देती है।

जब किसी वस्तु का प्रत्यक्ष वर्णन करने के बजाय परोक्ष वर्णन किया जाता है, यानी जिस व्याख्या में उस वस्तु के सिवा दूसरे सभी वस्तुओं का निषेध किया जता है, वह व्यावर्तक व्याख्या कहलाती है। आज हिंदू की व्यावर्तक व्याख्या की जा रही है - जो मुसलमान नहीं, ईसाई नहीं, बौद्ध नहीं, पारसी नहीं, वह हिंदू। समाजशास्त्र के क्षेत्र में ऐसी व्याख्याएं विशेषरूप से अनर्थकारी होती हैं। समाज में अन्योन्यभाव ही चलता है। हिंदू धर्म की रचना उदार तत्व पर की गयी है। इसलिए हिंदूधर्म में विचास्स्वातंत्र्य की पराकाष्ठा दिखायी देती है। उसमें षड्-दर्शनों का समावेश है। अधिकांश हिंदू धर्म को सनातन धर्म कहते हैं। इसीलिए हिंदूधर्म में भिन्नभिन्न दर्शनकारों के बीच जोरदार कुश्तियां भी हो सकीं और सभी का समावेश भी हो सका है। हिंदूधर्म में तात्विक-विचार भेद सहन करने की अद्भुत शक्ति है, वैसे आचार-भेद सहन करने की भी है। ब्राह्मण आदि वर्णभेद, ब्रह्मचर्य आदि आश्रम-भेद, शैव-वैष्णव आदि देवता-भेद, द्वैत-अद्वैत आदि दर्शन-भेद, कबीर-नानक आदि पंथ-भेद, समर्थ-चैतन्य आदि भक्त-भेद, श्रौत-स्मार्त आदि शास्त्र-भेद, उत्सर्ग-अपवाद आदि नियम-भेद, तीर्थ-क्षेत्रादि स्थल-भेद से हिंदूधर्म में आचासभेद मान्य किए गए हैं। इसलिए अन्य धर्मों के आचार-भेद को मान्य करने से हिंदू धर्म का कुछ बिगड़ता नहीं है। समुद्र में दो-चार नदियां और मिल जाएं तो भी समुद्र का कुछ बिगड़ता नहीं है। हिंदूधर्म में कृत्रिम रचना के लक्षण बहुत कम मिलते हैं। हिंदूधर्म की इमारत की रचना ग्रन्थ-प्रामाण्य के आधार पर नहीं की गयी है। अनेक ग्रंथ हिंदूधर्म में जुड़ गए हैं लेकिन हिंदूधर्म किसी ग्रंथ में बद्ध नहीं है। ऋग्वेद आदि चार वेद, ब्राह्मण, उपनिषद, स्मृतिग्रंथ, भारत आदि इतिहास, पुराण, सूत्र-दर्शन, भाष्य आदि संस्कृत ग्रंथ, नानक का ग्रंथ साहब, कबीर का बीजक, तुलसीदास की रामायण, तुकाराम की गाथा इत्यादि भाषाग्रंथ सभी कमबेशी मात्रा में हिंदूधर्म के ग्रंथ हैं, लेकिन हिंदूधर्म में इनमें से एक भी ग्रंथ का नहीं है। इन ग्रंथों और हिंदूधर्म में द्वैत नहीं, अद्वैत ही है। शंकराचार्य की भाषा में कहें तो समुद्र की लहरें होती हैं, लहरों का समुद्र नहीं।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हिंदू धर्म ने किसी भी ग्रंथ का - वेदों का भी - प्रामाण्य स्वीकार नहीं किया है। हिंदूधर्म का नाम किसी भी सत्पुरुष के नाम से जुड़ा हुआ नहीं है। इस हिंदूधर्मरूपी गांव की रचना ही ऐसी है कि यहां कोई नायक नहीं बन सकता, सेवक बन सकता है। हिंदुस्तान में हमने किसी एक पुरुष के नाम से धर्म नहीं चलाया। यह इस देश के लिए अभिमान की बात हो सकती है। अगर हम उनका नाम लेकर उनके कार्य को आगे बढ़ाने की प्रतिज्ञा करते हैं तो उनके नाम का गौरव हो सकता है। फिर भी अपने विचार को किसी महापुरुष के नाम के साथ नहीं बांधा, जैसे कि ईसाइयों ने ईसाईधर्म को ईसा के साथ बांध दिया। हम ईसा का नाम भी बड़े गौरव के साथ लेते हैं, लेकिन हम यह मानने को राजी नहीं कि किसी एक महापुरुष के जरिये ही हम भगवान के पास पहुंच सकते हैं। हमारा और भगवान का सीधा संबंध हो सकता है। हिंदूधर्म व्यक्तित्व के वृक्ष पर रहने वाली अमरबेल नहीं है। वह एक स्वतंत्र वृक्ष है। हिंदूधर्म पौरुषेय नहीं इसलिए यद्यपि उसके पवित्र प्रवाह में अनगिनत सत्पुरुषों ने स्नान किया है। जिस प्रकार आकाश एक जगह स्थिर होकर भी जोरों से बहने वाली हवा को पीछे छोड़ देता है, उसी प्रकार हिंदूधर्म का स्थिर वेग व्यक्ति के चंचल वेग को अपने एक कोने में ही सोख लेता है। हिंदूधर्म को किसी भी ग्रंथ या संत का बंधन नहीं, वैसे ही किसी आचारविशेष का या पंथ का भी बंधन नहीं है। हिंदूधर्म सांप्रदायिक न होने के कारण उसका न कोई ग्रंथ है, न पंथ है, न संत ही है। हिंदूधर्म का मूल विचार 'वैश्वानर तत्व पर खड़ा है, इसलिए वह स्वभावतः ही मानवधर्म बना है। मनु ने भी कहा है - इस देश में जन्मे महान पुरुषों से पृथ्वी के सर्व मानव अपनाअपना चरित्र सीखेंगे। हिंदूधर्म का अंतिम कहना यह है कि संस्कार आदि के झमेले में न पड़ते हुए केवल मनुष्यमात्र को लागू होने वाले धर्म का भी आचरण मनुष्य श्रद्धा से करेगा, तो उतने से ही मनुष्य पर ब्रह्मविद्या का अनुग्रह हो सकता है: धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, इंद्रिय निग्रह, धैर्य, विद्या, सत्य, अक्रोध इन दस लक्षणों का संपूर्ण पालन करने वाला पुरुष और कुछ करे, न करे हिंदूधर्म को मान्य है। हिंदूधर्म में अन्य धर्मों का अभाव नहीं है। स्भी धर्मों के सिद्धांत और साधना उसमें बीजरूप में उपलब्ध हैं।

इन दिनों हर कौम और हर धर्म की कसौटी होने जा रही है। जो संप्रदाय, जो धर्म उस कसौटी पर टिकेंगे, वे ही टिकेंगे, बाकी के नहीं टिक सकते। अगर हम अपने को चहारदीवारी में बंद कर लेंगे, तो हमारी उन्नति नहीं हो सकेगी और जिस उदारता का हिंदूधर्म में विस्तार हुआ है उसकी समाप्ति हो जाएगी। धर्म-विचार में उदारता होनी चाहिए। समझना चाहिए कि जो भी कोई जिज्ञासु हो, उसके सामने अपना विचार रखना और प्रेम से उससे वार्तालाप करना भक्त का लक्षण है। हमारा हृदय सबके लिए खुला होना चाहिए, मुक्त होना चाहिए। अन्यथा, अपने धर्मस्थानों को एक जेल के माफिक बना देना हमारे लिए बड़ा हानिकारक होगा और उसमें सज्जनों को प्रवेश करने में हिचकिचाहट रही, तो मंदिरों के लिए आज जो थोड़ी-बहुत श्रद्धा बची है, वह भी खत्म हो जाएगी। सब धर्मों में भक्ति समान तत्व है। वह सबके लिए समान है, यही धर्म की असलियत है, आत्मा है।

(विनोबा साहित्य खण्ड 19)